ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 PP. NO.- 253-256

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-14, No.-III, Issues-21, YEAR- Sept.-2021

पूर्वी उत्तर प्रदेश के थारू जनजाति में सामाजिक मूल्यों एवं रीतिरिवाजों का प्रभाव

डॉ0 रीना वर्मा

E-mail: dr.kkchand@gmail.com

Received- 27.08.2021, Revised- 30.08.2021, Accepted - 04.09.2021

सारांश : ***'समाज में व्यक्तियों के अधिकांश व्यवहारों और उनके सोचने के ढंगों का निर्धारण संस्कृति के उस अभौतिक पक्ष से होता है जो पुरानी पीढ़ियों के संचित अनुभवों पर आधारित होता है। यही सांस्कृतिक विशेषताएँ हमें एक विशेष ढंग से व्यवहार करने औरा एक–दूसरे से सम्बन्ध स्थापित करने का निर्देश देती हैं। वास्तव में, किसी समाज की संस्कृति ही यह स्पष्ट करती है कि किसी विशेष सामाजिक तथ्य अथवा घटना का हमारे लिए क्या अर्थ है, कौन–से व्यवहार उचित हैं और कौन–से अनुचित तथा एक विशेष परिस्थिति में व्यक्ति को किन नियमों के अनुसार व्यवहार करना चाहिए। दूसरे शब्दों में यह कहा जा सकता है कि प्रत्येक समाज व्यवहार के कुछ ऐसे लक्ष्य निर्धारित करता है जिन्हें ध्यान में रखते हुए ही यह तय किया जाता है कि व्यक्ति के कौन–से व्यवहार उचित हैं और कौन से अनुचित? यह लक्ष्य अथवा सामाजिक प्राथमिकताएं वे होती है जिन्हें एक समाज के सदस्य अपने लिए आवश्यक समझते हैं तथा जिन्हें बनाए रखने के लिए उस समाज के लोग बड़े से बड़ा बलिदान करने के लिए भी तैयार रहते हैं। इन्हीं सांस्कृतिक लक्ष्यों अथवा प्राथमिकताओं को सामाजिक मूल्य कहा जाता है।***

कुंजीभूत शब्द– अभौतिक पक्ष, पुरानी पीढ़िया, अनुभव,सांस्कृतिक विशेषताएँ।

विभिन्न संस्कृतियों की प्रकृति एक–दूसरे से भिन्न होती है। यही कारण है कि एक–दूसरे से भिन्न संस्कृतियों वाले समाजों के सामाजिक मूल्य भी एक–दूसरे के कुछ भिन्न होते हैं। एक समाज के अन्दर रहने वाले लोग समान मूल्यों से बँधे होने के कारण ही लगभग समान तरह से व्यवहार करते हैं। समान मूल्यों के अनुसार व्यवहार करने के कारण ही एक समाज में सन्तुलन बना रहता है। जब कभी भी अपने मूल्यों के बारे में एक समाज से सम्बन्धित विभिन्न समूहों के बीच भ्रम पैदा होने लगता है, तो समाज का सन्तुलन भी डगमगाने लगता है। वास्तविकता यह है कि समाज में विभिन्न लोगों के स्वार्थ अलग–अलग होने के कारण इस बात की सम्भावना रहती है कि उनके विचारों और व्यवहारों का तालमेल कमज़ोर पढ़ जाये। व्यक्तियों को यदि अपने व्यवहारों का निर्धारण स्वयं करने की छूट दे दी जाये तो वे इस बात का निर्धारण नहीं कर सकते कि कौन सा व्यवहार करना उचित है और कौन से अनुचित। वे यह भी निर्णय नहीं कर सकते कि उनके वास्तविक लक्ष्य क्या हैं तथा उन लक्ष्यों को किन साधनों के द्वारा प्राप्त किया जाये। इससे समाज में तरह–तरह के संघर्ष और तनाव बढ़ सकते हैं। सामाजिक मूल्य प्रत्येक व्यवहार का एक विशेष अर्थ स्पष्ट करते हैं तथा व्यक्तियों के सामने समाज द्वारा मान्यता–प्राप्त लक्ष्य करके उन्हे प्राप्त करने के साधनों का निर्धारण करते है पर सामाजिक मूल्यों को व्यक्तिगत इच्छाओं और उनके निर्धारण की कसौटी के रूप में देखा जाता है। राधाकमल मुकर्जी ने लिखा है कि "मूल्य सामाजिक मान्यता प्राप्त समूह की वे इच्छाएँ अथवा लक्ष्य की सामाजिक सीख की प्रक्रिया के द्वारा व्यक्ति का अन्तरीकरण हो जाता है और इस प्रकार व्यक्ति इन व्यवहारों की प्राथमिकताएँ, मानदण्ड और आकांक्षा हैं जॉन्सन के अनुसार, "सामाजिक मूल्य एक मानदण्ड है जिसके द्वारा विभिन्न दशाओं के बीच तुलना है, उन्हें स्वीकार अथवा अस्वीकार किया है। एक–दूसरे की तुलना में उन्हें कम या अधिक उपयोगी है।

सामाजिक मूल्य हमारे सामाजिक– सांस्कृतिक सम्बन्धित विभिन्न तथ्यों के अर्थ को स्पष्ट करके हमारे को प्रभावित करते है। प्रत्येक समाज में परिवार, विचारों क्रियाओं, जीविका–उपार्जन, अतिथि सत्कार, सामाजिक स्थिति आदि से सम्बन्धित बहुत–से मूल उदाहरण के लिए, भारतीय समाज में क्षमा, दया, अथवा पुरूषार्थ के रूप में धर्म, अर्थ, काम तथा मोक्ष आदि सामाजिक मूल्य हैं, जिनका हमारे लिए एक विषेष अर्थ है। सभी मूल्य एक विशेष दृष्टिकोण को लेकर हमें विभिन्नता की प्रेरणा देते हैं। इसी तरह हमारे समाज में विवाह का एक अर्थ है, जो इसे एक धार्मिक बन्धन के रूप में स्पष्ट है। पष्चिमी समाजों में विवाह का अर्थ एक सुविधाजनक सम्बन्ध से लगाया जाता है। राजनैतिक जीवन में धर्मार्थ, न्याय और समानता कुछ विशेष मूल्य है। अनेक समय वैयक्तिक स्वतन्त्रता को एक महत्वपूर्ण सामाजिक मूल्य में देखा जाता है, जबकि कुछ दूसरे समाजों के मूल्य स्त्रियों, किषोरों को अधिक स्वतन्त्रता देने के पक्ष में नही होते। समाज में ईमानदारी से जीविका उपार्जित करना एक बड़ा मूल्य है, जबकि कुछ सभाजों में इसका कोई महत्व नहीं होता। किसी संस्कृति से सम्बन्धित मूल्यों का सम्बन्ध चाहते हो अथवा विश्वास से, मानवीय व्यवहारों और सामाजिक प्रकृति का निर्धारण करने में इनकी भूमिका बहुत महत्वपूर्ण होती है। एक समूह में जब सभी सदस्य समान मूल्यों के अनुसार व्यवहार करते हैं तो इससे सामाजिक एकीकरण में वृद्वि होती है। सामाजिक संघर्षों को कम करने में भी मूल्यों का विषेष योगदान होता है। उदाहरण के लिए, समानता, पारस्परिक सहायता, सामाजिक न्याय, कर्तव्यपालन, स्वतंत्रता और अहिंसा आदि ऐसे मूल्य

एसो0 प्रोफेसर– समाजशास्त्र विभाग, मौलाना आजाद इंस्टिट्यूट ऑफ ह्यूमन साइंस एण्ड टेक्नोलॉजी, महमुदाबाद (उ0प्र0), भारत

अनुरूपी लेखक/संयुक्त लेखक

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-14, No.-III, Issues-21, YEAR- Sept.-2021

हैं जो संघर्षों को कम करके सामाजिक व्यवस्था को सन्तुलित बनाये रखते हैं। मूल्यों के प्रभाव से व्यक्ति उन समाज विरोधी कार्यों को नहीं कर पाता जिनसे समाज के विघटित होने का डर रहता है। मूल्य समाज की प्रत्याशाओं के अनुसार लोगों के व्यक्तित्व को एक विशेष सॉचे में ढालते हैं। इनकी सहायता से समाज से अनुकूलन करना सरल हो जाता है।

इसी कारण राधाकमल मुकर्जी ने समाज को "मूल्यों का संगठन" कहकर परिभाषित किया है। वास्तव में, मूल्यों की प्रकृति सामूहिक होती है। इसी कारण लोगों की मनोवृत्तियों का निर्धारण करने में यह एक दबाव का काम करते हैं। इस आधार पर बेबर ने यहॉ तक लिखा है कि समाज में मानव व्यवहारों का वैज्ञानिक विष्लेषण करने के लिए यह आवश्यक है कि उस समाज के मूल्यों का सम्बन्ध हमारे जीवन के अतार्किक पक्ष से होने के पश्चात भी सामाजिक अस्तित्व को बनाए रखने में इनकी भूमिका बहुत महत्वपूर्ण होती है।

हमारे सामाजिक जीवन का निर्माण अनेक पक्षों से होता है। इन सभी पक्षों से सम्बन्धित विभिन्न मूल्य ही इन्हें एक–दूसरे से बॉधें रखते हैं उदाहरण के लिएख् सामाजिक स्तर पर सामूहिकता समानता, सुरक्षा और नैतिकता से सम्बन्धित कुछ मूल्य होते हैं। आर्थिक स्तर पर मूल्यों के अनुसार ही व्यक्ति अपनी और अपने आश्रितों की आवश्यकताओं को पूरा करता है। राजनीतिक स्तर पर समानता, स्वतन्त्रता, न्याय और अधिकार से सम्बन्धित मूल्य शक्ति के व्यवहारों को प्रभावित करते हैं। नैतिक स्तर पर अनेक मूल्य सहयोग, प्रेम, सहानुभूति तथा कर्तव्यपालन को प्रोत्साहन देते हैं। इन सभी मूल्यों के बीच जो कार्यात्मक सम्बन्ध बना रहता है। उसी की सहायता से सामाजिक जीवन में व्यवस्था और सन्तुलन का गुण उत्पन्न हो पाता है। मुकर्जी ने लिखा है, "मूल्यों, सदगुणों तथा आदर्षों के बिना समाजों का अस्तित्व ही सम्भव नहीं।" अनेक विद्वानों का यहॉ तक विचार है कि वर्तमान समाजों में कानून तथा व्यवस्था की बिगड़ती हुई दशा का सबसे बड़ा कारण समाज की बढ़ती हुई मूल्यहीनता है।

मूल्यों का दूसरा महत्वपूर्ण कार्य समाज के विभिन्न समूहों के बीच एकरूपता तथा एकता में वृद्वि करना है। वास्तव में, मूल्यों व विकास सामूहिक एकमत के आधार पर होता है, इसलिए इन्हें सम्पूर्ण समाज की मान्यता मिल जाती है।" जब प्रत्येक व्यक्ति अपने समाज के मूल्यों के अनुसार ही व्यवहार करता है, तो इससे समाज में एकरूपता को प्रोत्साहन मिलता है। मैक्डूगल ने मनोवैज्ञानिक आधार पर भी मूल्यों के इस महत्व को स्वीकार करते हुए कहा है कि "स्वीकृत मूल्यों का प्रचलन ही किसी समूह की एकता का आधार होता है।"

जन्मजात रूप से मनुष्य में वह सभी प्रवृत्तियाँ हैं, जो पशुओ में पायी जाती हैं। मूल्य ही वह महत्वपूर्ण आधार है, जिसकी सहायता से मानव की पशु–प्रवृत्तियों के प्रभाव को कम करके उसमे मानवीय विशेषताओं को विकसित किया जाता है। विभिन्न मूल्य बहुत सरल ढंग से मनुष्य के संवेगों और इच्छाओं कोस सन्तुष्ट करके उसे एक मानव प्राणी बनाते हैं। एक ओर सामूहिकता से सम्बन्धित मूल्य व्यक्ति की आत्मकेन्द्रित प्रकृति का दमन करते हैं, तो दूसरी ओर, आर्थिक, वैधानिक तथा नैतिक मूल्य उसे समाज के दूसरे सदस्यो के अनुरूप बनने की प्रेरणा देते हैं। इस दृष्टिकोण से मानवीयकरण की दिशा में मूल्यों का एक विशेष योगदान है।"

मूल्यों की प्रति सामूहिक होने के कारण इनमे अनिवार्यता तथा बाध्यता का समावेश होता है। इसका अभिप्राय यह है कि यह मूल्य व्यक्ति पर इस बात का दबाव डालते हैं कि वे उन्हीं के अनुसार व्यवहार करें। समाज की विभिन्न जनरीतियाँ, प्रधाएँ तथा नैतिक नियम भी मूल्यों को प्रभावपूर्ण बनाने का काम करते रहते हैं। इन सबका परिणाम यह होता है कि व्यक्ति उसी तरह से व्यवहार करने लगते हैं, जिस तरह के व्यवहार करने का निर्देश उन्हें अपने समाज के मूल्यों द्वारा प्राप्त होता है। मूल्य व्यक्ति के व्यवहारों का निर्देश ही नहीं करते, बल्कि उसे त्रुटि और सुधार की मंहगी विधि से भी बचा लेते हैं।

वैयिक्तक दृष्टिकोण से मूल्यों का एक महत्वपूर्ण कार्य व्यक्ति को अपनी सामाजिक दशाओं से अनुकूलन करने में सहायता प्रदान करना है। वास्तविकता यह है कि मूल्य समाज के महत्वपूर्ण लक्ष्यों का निर्धारण करते हैं तथा प्रत्येक परिस्थिति तथा क्रिया के अर्थ को स्पष्ट करते हैं। इससे व्यक्ति सरलतापूर्वक यह समझ लेता है कि किसी परिस्थिति को किस दृष्टिकोण से देखना उचित है तथा उसके समूह में एक विशेष व्यवहार का अर्थ क्या है? इसके फलस्वरूप, व्यक्ति में मानसिक तनावों और संघर्षों की सम्भावना कम से कम हो जाती है। इससे स्पष्ट होता है कि मूल्य व्यक्ति के लिए सामाजिक अनुकूलन में ही सहायक नहीं होते' बल्कि व्यक्ति को स्वयं अपने व्यतिव में अनुकूलन करने में भी सहायता देते हैं। प्रत्येक समाज की संस्कृति के निर्माण में मूल्यों का विशेष योगदान होता है। मूल्यों के आधार पर ही समाज के सदस्य यह सीखते हैं कि एक विशेष व्यवस्था का अर्थ क्या है? इसके फलस्वरूप, एक समाज के सदस्य न केवल अपने मूल्यों में विश्वास करते हैं, बल्कि सीख की प्रक्रिया के द्वारा आगामी पीढ़ियों के लिए इसका संचरण भी कर दिया जाता है। इससे संस्कृति को स्थायित्व मिलता है। सच तो यह है कि एक सामज की सभी जनरीतियॉ, लोकाधार, प्रथाएँ परम्पराएँ तथा नैतिक नियम उस समाज के किसी न किसी मूल्य पर ही आधारित होते हैं। यह सामाजिक प्रतिमान जितने अधिक प्रभावपूर्ण होते हैं, संस्कृति भी उतनी ही अधिक व्यवस्थित और प्रभावपूर्ण बन जाती है।

डॉ0 मुकर्जी ने स्पष्ट किया है कि व्यक्तित्व के निर्माण तथा संगठन में भी मूल्यों को महत्व बहुत

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-14, No.-III, Issues-21, YEAR- Sept.-2021

अधिक है। आपके शब्दों में मूल्य–व्यवस्था एक ऐसे धागे की तरह हैं जो व्यक्तिगत प्रसन्नता, व्यक्तिगत सन्तुलन तथा सामाजिक और संस्थात्मक, अनुकूलन के मोतियों को एक–दूसरे के साथ पिरोता है।'' इसका तात्पर्य यह है एक ओर विभिन्न मुल्य व्यक्ति को आत्मिक सन्तुष्टि प्रदान करके उसके व्यतिव को संगठित रखते हैं तो दूसरी ओर, यह व्यक्ति को अपनी सामाजिक दशाओं तथा संस्थाओं से अनकूलन करने का अवसर देकर उसके व्यतिव को सल्तुलित बनाते हैं। यही कारण है कि एक समाज की व्यक्तिगत–व्यवस्था बहुत बड़ी सीमा तक उसकी मूल्य–व्यवस्था के अनुसार ढल जाती।

इस आधार पर राधाकमल मुकर्जी ने यह निष्कर्ष दिया है कि प्रत्येक समाज का अस्तित्व उसके मूल्यों पर ही आधारित होता है। कोई समाज यदि अपने अस्तित्व को बनाये रखना चाहता है तो उसके लिए यह आवश्यक है कि वह अपने सदस्यो के लिए सर्वोच्च मूल्यों की पूर्ति नियमित रूप से करता रहे।

वास्तविकता यह है कि व्यक्ति के सामान्य तथा व्याधिकीय व्यवहारों को समझने के लिए मूल्यों का बहुत महत्व हैं। सामाजिक मूल्य जहाँ समाज तथा व्यतिव को संगठित बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, वहीं यह अक्सर सामाजिक संघर्ष की दशा भी उत्पन्न कर देते हैं। ऐसा मुख्यतः तब होता है जब नये और पुराने मूल्यों के बीच असामंजस्य अथवा विरोध की दशा पैदा हो जाती है। उदाहरण के लिए कुछ समय पहले तक व्यक्ति परिवार तथा प्रत्येक समह का जीवन ईश्वरीय भय, सत्य, बन्धुत्व, आदर और प्रेम जैसे मल्यों पर आधारित था, जबकि वर्तमान युग में भौतिक लाभ, आत्म–दर्शन, चतुरता तथा व्यक्तिवाद समाज के प्रमुख मूल्य बन गये हैं। स्पष्ट है कि इसी के फलस्वरूप पीढ़ियों के बीच संघर्ष की स्थिति उत्पन्न हुई है। इस दशा में यह आवश्यक है कि सामाजिक विकास के साथ ही मूल्य–व्यवस्था में संशोधन किया जाता रहे। अक्सर यह समझ लिया जाता है कि मूल्य और विज्ञान एक–दूसरे के विरोधी हैं। वास्तव में ऐसा नहीं है। विज्ञान भौतिक और बौद्धिक प्रगति का साधन है, जबकि मूल्य विज्ञान की संहारक शक्ति पर नियन्त्रण लगाकर उसे नैतिकता के बन्धन से बांधते हैं। उदाहरण के लिए विज्ञान के द्वारा अणुशक्ति का विकास हुआ लेकिन मूल्य ही यह तय करते है कि इसका उपयोग युद्धों के लिए न करके मानव जीवन की रचनात्मकता के लिए कियाजाय। इसी आधार पर बानोवास्की ने लिखा है कि ''वैज्ञानिक सभ्यता का तब तक कोई अस्तित्व नहीं है जब तक वह सत्य के मूल्य में विश्वास नहीं करती।'' इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि यह विज्ञान न केवल मूल्यों के वैषिवक अध्ययन में रुचि लेता है बल्कि विरोधपूर्ण मूल्यों से उत्पन्न होने वाली समस्याओं का भी हल खोजने का प्रयत्न करता है।

सारिणी संख्या–1 के अध्ययन में उत्तरदाताओं से यह जानने का प्रयास किया गया कि क्या जनजातीय समाज संक्रमण के दौर से गुजर रहा है? के क्रम में ग्राम परिवर्त्य के आधार पर ग्राम रजडेरवा में सम्पूर्ण 100 उत्तरदाताओं में से 59 (59.0 प्रतिशत) उत्तरदाताओं ने हॉ उत्तरा दिये और 41(41.0 प्रतिशत) उत्तरादाताओं ने 'न' में दिये, जबकि विशुनपुरा में (61.0 प्रतिशत) ने हॉ में उत्तर दिये औरी 39.0 प्रतिषत उत्तरदाताओं ने नहीं में उत्तर दिये तथा ग्राम सोनगढ़ा उत्तरदाताओं में से 58(58.0 प्रतिशत) ने हॉ, 42.0 प्रतिशत) ने नहीं में उत्तर दिया है।

सारिणी सं.–1

क्या जनजातीय समाज संक्रमण के दौर से गुज़र रहा है?

गॉव	हॉ	प्रति0	नहीं	प्रति0	योग
रजडेरवा	59	59.00	41	41.0	100
विशुनपुर विश्राम	61	61.00	39	39.0	100
सोनगढ़ा	58	58.00	42	42.0	100

उपर्युक्त सारिणी के अध्ययन के आधार से स्पष्ट है कि सम्पूर्ण 300 उत्तरदाताओं में 178 (59.0 प्रतिशत) उत्तरदाताओं के अनुसार आज जनजाती समाज संक्रमण के दौर से गुज़र रहा है, जबकि 122 (40.67 प्रतिशत) उत्तरदाताअें के अनुसार, ऐसा नही है। सभ्य समाज के सम्पर्क के कारण समाज में संक्रमण आया है। जंगलों के कटने से एवं रहन–सहन में भी परिवर्तन आया है, प्रवास के लिए मजबूर हो रहे हैं।

सारिणी सं.–2

क्या आपके समाज में सामाजिक मूल्यों को मान्यता प्राप्त है?

गॉव	हॉ	प्रति0	नहीं	प्रति0	योग
रजडेरवा	67	67.00	33	33.0	100
विशुनपुर विश्राम	63	63.00	37	37.0	100
सोनगढ़ा	75	75.00	25	25.0	100

सारिणी संख्या–2 के अध्ययन में उत्तरदाताओं द्वारा इस बात का प्रयास किया गया कि क्या आपके समाज में सामाजिक मूल्यों को मान्यता प्राप्त है? के क्रम में ग्राम परिवर्तय के ग्राम रजडेरवा में सम्पूर्ण 100 उत्तरदाताओं में से 67 (67.0 प्रतिशत) उत्तरदाताओं ने हॉ उत्तर दिये और 33 (33.0 प्रतिशत) उत्तरदाताओं ने नहीं में उत्तर दिये तथा ग्राम जबकि विषुनपुर विश्राम ग्रम में 63 (63.0 प्रतिशत) उत्तरादाताओं ने हॉ में उत्तर दिये और 37 (37.0 प्रतिशत) उत्तरदाताओं ने नहीं में उत्तर दिये तथा ग्राम सोनगढ़ा में 100 उत्तरदाताओं में से 75(75.0 प्रतिशत) ने हॉ में उत्तर दिये और 25 (25.0 प्रतिशत) ने नहीं में उत्तर दिया।

उपर्युक्त सारिणी के अध्ययन के आधार पर स्पष्ट है कि सम्पूर्ण 300 उत्तरदाताओं में से 205 (68.33 प्रतिशत) उत्तरदाताओं के अनुसार समाज में सामाजिक मूल्यों को मान्यता प्राप्त है, जबकि 95 (31.67 प्रतिशत) उत्तरदाताओं के अनुसार, समाज में सामाजिक मूल्यों को अीी पूर्ण रूप से मान्यता नहीं

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-14, No.-III, Issues-21, YEAR- Sept.-2021

प्राप्त है। मूल्य किसी भी समाज का अविभाज्य अंग है, जिस किसी समाज की आप कल्पना करते हैं, उन समाजों में मूल्यों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। जनजातीय समाज में भी सामाजिक मूल्यों को मान्यता प्राप्त है।

सारिणी सं.–3

क्या सभ्य समाज ने जनजातीय समाज को प्रभावित किया है?

गाँव	हाँ	प्रति0	नहीं	प्रति0	योग
रजडेरवा	75	75.00	25	25.00	100
विषुनपुर विश्राम	78	78.00	22	22.00	100
सोनगढ़ा	77	77.00	23	23.00	100

सारिणी संख्या–3 के अध्ययन में उत्तरदाताओं से यह जानने का प्रयास किया गया कि क्या सभ्य समाज ने जनजातीय समाज को प्रभावित किया है। के क्रम में ग्राम परिवर्त्य के आधार पर ग्राम रजडेरवा में सम्पूर्ण 100 उत्तरदाताओं में से 75 (75.00 प्रतिशत) उत्तरदाताओं ने हॉ उत्तर दिये और 25(25.0 प्रतिशत) का उत्तरदाताओं ने न में दिये, जबकि विशुनपुर विश्राम में 78 (78.0 प्रतिशत) ने हॉ में उत्तर दिये और 22 (22.0 प्रतिशत) उत्तरदाताओं ने नहीं में उत्तर दिये तथा ग्राम सोनगढ़ा में 100 उत्तरदाताओं में से 77 (77.0 प्रतिशत) ने हॉ में तथा 23 (23.0 प्रतिशत) ने नहीं में उत्तर दिया।

उपर्युक्त सारिणी के अध्ययन के आधार पर कहा जा सकता है कि सम्पूर्ण 300 उत्तरदाताओं में से 230 (76.67 प्रतिशत) उत्तरदाताओं ने बताया कि सभ्य समाज ने जनजातीय समाज को प्रभावित किया है, जबकि 70 (23. 33 प्रतिशत) उत्तरदाताओं के अनुसार सभ्य समाज ने जनजातीय समाज को अभी प्रभावित नहीं किया है। आधुनिकीकरण एवं बदलते परिवेश ने जनजातीय समाज को प्रभावित किया है, जिसमें सभ्य समाज की महत्वपूर्ण भूमिका है। सभ्य समाज के लोगों ने जनजातीय समाज के लोगों को अपने आकर्षण के जाल में बुरी तरह जकड़ लिया है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. Mukerjee, Radhakamal, "A General Theory of Society in The Frontiers of Social Sciences", Baljit Singh (Ed.), pp 22-23.
2. Johnson, H.M., "Socioogy" p. 49
3. उप्रेती, हरिश्चन्द्र : भारतीय जनजातियॉ, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर 1997.
4. लूसी, मेयर,: सामाजिक भू–विज्ञान की भूमिका, डॉ0 सच्चिदानन्द अनूदित) बिहार हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, पटना, 1973.
5. हसनैन,नदीम : ट्राइबल इण्डिया टु–डे हरनाम पब्लिकेशन, नई दिल्ली 1987.
6. विद्यार्थी , एल.पी. तथा बी0के0 राय, दि ट्राइबल कल्चर ऑफ इण्डिया, कन्सेप्ट पब्लिशिंग कम्पनी 1977 पृ. 454.
7. Mukerjee, Radhakamal, "A General Theory of Society in The Frontiers of Social Sciences", Baljit Singh (Ed.) pp. 19-20.

*****